C·S(M) 09

Sl. No. 198 D–DTN–J–NUB

MAITHILI

Paper—II

(Literature)

Time Allowed : Three Hours	Maximum Marks : 300

INSTRUCTIONS

Candidates should attempt Question Nos. 1 and 5 which are compulsory, and any THREE of the remaining questions, selecting at least ONE question from each Section.

The number of marks carried by each question is indicated at the end of the question.

Answers must be written in Maithili.

Section—A

1. निम्नलिखितमे सँ कोनो **तीन** अवतरणक सप्रसंग व्याख्या प्रस्तुत करैत ओहिमे सन्निहित भाव आ ओकर काव्यगत वैशिष्ट्यकें स्पष्ट करू (उत्तर अधिकतम *200* शब्दमे दातव्य) : 20×3=60

(क)

पुतना तरुअर काली नाग,
एत दिन से बड़ अजगुत लाग।
एहि बेरि संसए लाग बिसेखी,
कृष्णक जन्म अमानुष लेखी।
के ई थिकाह ककर अवतार,
संसय बस भेल सकल गोआर।
संसय अन्त कोनहु नहि पाओल,
तखन कृष्ण पुन मोहनि लगाओल।

(ख) फूल जे गमकैत वन-वनमे लुटाबै अछि सुरभि-घट
खिलखिला कऽ जे हँसै अछि भव-भुवन-भरिमे हृदय सँ।
भ्रमर जे गुंजन करै अछि, गीत गाबै अछि विहंगम
मग्न-तन नर्त्तन कलापी जे करै अछि चिर-प्रणय सँ॥

(ग) कुल-वैभव रुचि रूप वयस शुचि चरित आचरित तूल।
दुहु कुमार सुकुमार बुझाइछ एक तरुक दुइ फूल॥
मधु माधव जनु, नभ नभस्य जनु, तप-तपस्य जनु युग्म।
एक ऋतुक दुइ मास प्रकृति गुण समगम किछु मृदु-तिग्म॥

(घ) कहलनि नीतिशास्त्र-अनुसार। चारक वध नहि अछि व्यवहार॥
दूत बेचारा मारल जयत। रामचन्द्र सौं युद्ध न हयत॥
अङ्कित हयता कहता जाय। राखक नहि थिक दूत बझाय॥
नीति विभीषण कहलहुँ नीक। मानल बचन सदर्थ अहींक॥

2. "लालदासक 'रमेश्वर-चरित मिथिला रामायण' मैथिली राम-काव्य परम्पराक विकासमे बहुविध कारणेँ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि।" 'बालकाण्ड'क आधार पर लालदासक काव्य-सौष्ठवक विवेचन करैत एहि कथनक समीक्षा करू। 60

3. "गोविन्ददासक काव्य शृंगारपरक होइतहुँ समष्टिरूपेँ भक्तिभावक अभिव्यक्ति थिक।" 'गोविन्ददास भजनावली'क पठित अंशक आधार पर एहि उक्तिक समीक्षा करैत अपन स्वतन्त्र विचार प्रगट करू। 60

4. "'चित्रा'मे शब्दचित्रक द्वारा परिस्थिति, व्यक्ति ओ मिथिलाक नारीक समस्याक चित्रण तथा व्यंजना भेल अछि।" 'चित्रा'क नामकरणक सार्थकता प्रमाणित करैत एहि उक्तिक समीक्षा करू। 60

Section—B

5. निम्नलिखितमे सँ कोनो तीन गद्यांशक सन्दर्भ सहित व्याख्या करैत ओहिमे सन्निहित विचार आ काव्यगत विशेषताकें स्पष्ट करू (उत्तर अधिकतम *200* शब्दमे दातव्य) : 20×3=60

(क) मउगीक जिनगी महाग विचित्र होइत छैक। ओकरा नीको मोन पड़ै छै आ अधलाहो मोन पाड़ैत नीक लगै छैक। ओइ दिन मोन होअय जे भने ओकर गट्टा तौं तोड़ि दितही। मगर फेर जखन पंचमे ओकरा जबाव भेटलै त' कहाँदन ओ बड़ हिचकि-हिचकि क' कनै। आब सोचै छियै जे ओ जेहन छैक ताहिमे ओकर कोनो दोख ने। हमहूँ जेहन छी तइमे हमरो कोनो दोख ने।

(ख) कोनो प्रियतमा अपना प्रेमीक लेल नहि कनइए। कनइए केवल कन्या। कनइए केवल कन्या अपन मायक स्तन सँ झरैत दूधक निर्झरक लेल, मायक हृदय सँ झरैत स्नेह-वात्सल्यक निर्झरक लेल। आ माय? आ मदालसा? मदालसा एहिना बेटीकें ओछान पर सूतलि छोड़ि अन्हार रातिमे, साओन-भादोक बरखामे अभिसारिका बन' चलि जाइत अछि।

(ग) सुगियाक आँखि नोरा गेल छलैक। एक भिनसर सँ फिरीसान भ' क' बिछने छलि, आ से एक मिनटक ककरो चंठपनीमे नाश भ' गेलैक। ओ हतप्रभ भेलि ठाढ़ि छलि, ओकर मुँह दयनीयता सँ भरल छलैक। ओकर करुण मुँह देखि सभक मन दुःखी छलैक। दुःखक ओहि धरातलकें फोड़ि कऽ बहार भेलैक तामस, आक्रोश आ गारि जे स्वाभाविक छलैक, जे निर्बलक प्रतिकारक साधन छलैक।

(घ) ओ दुनू धारमे स्नान कए घूरि रहल छलीह। लगइ जेना धरती पर दूटा चान उतरि आएल हो। बड़की जेना भिनसरबाक चान हो आ छोटकी सँझुका। लगइ जेना दूटा कमल छवि छिरिया रहल हो। बड़की जेना फूलडालीमे राखल उदास सरोरुह आ छोटकी जेना सरोवरमे डोलैत अर्द्धविकसित सरसिज।

6. 'कथा-संग्रह'क आधार पर एहि तथ्यकें विवेचित-विश्लेषित करू जे—''आधुनिक मैथिली कथा समकालीन सामाजिक, आर्थिक विसंगति पर विभिन्न तरहें चोट करैत अछि''। 60

7. '''लोरिक विजय' उपन्यासमे मिथिलाक माटि-पानि आ संस्कारक सम्पूर्ण सौन्दर्य ओ सौरभ उद्‌भासित भऽ उठल अछि।'' एहि उक्तिक समीक्षा करैत 'लोरिक विजय'क औपन्यासिक वैशिष्ट्य पर प्रकाश दिअ। 60

8. ''कुचक्रमे फँसल देह आ मोनक यथावत् उपस्थापन राजकमलक कथाक निजता अछि।''—'कृति राजकमलक'क आधार पर एहि कथनक सम्यक् मूल्यांकन करैत मैथिलीक कथाकारक रूपमे राजकमल चौधरीक योगदानक विश्लेषण करू। 60

★ ★ ★